अंक योजना **अति गोपनीय** **(केवल आंतरिक और सीमित उपयोग हेतु)** **सेकंडरी स्कूल वार्षिक परीक्षा, 2026) X** **विषय – सामाजिक विज्ञान (087)** **पेपर कोड– 32/5/3**	
सामान्य निर्देश:-	
1.	आप जानते हैं कि परीक्षार्थियों के वास्तविक और सही मूल्यांकन में आकलन प्रक्रिया सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। मूल्यांकन में एक छोटी सी गलती से गंभीर परिणाम हो सकते हैं। भविष्य, शिक्षा प्रणाली और शिक्षण पेशे को प्रभावित कर सकती हैं। गलतियों से बचने के लिए, यह अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन शुरू करने से पहले, आपको स्पॉट मूल्यांकन दिशानिर्देशों को ध्यान से पढ़ना और समझना चाहिए।
2.	**मूल्यांकन प्रक्रिया गोपनीय नीति का एक हिस्सा है क्योंकि यह आयोजित परीक्षाओं की गोपनीयता, किए गए मूल्यांकन और कई अन्य पहलुओं से संबंधित है। इसका किसी भी तरह से सार्वजनिक रूप से लीक होना परीक्षा प्रणाली के पटरी से उतरने का कारण बन सकता है और लाखों परीक्षार्थियों के जीवन और भविष्य को प्रभावित कर सकता है। इस नीति/दस्तावेज को किसी से भी साझा करना, किसी पत्रिका में प्रकाशित करना और समाचार पत्र/वेबसाइट आदि में छापना भारतीय न्याय संहिता के तहत कार्रवाई को आमंत्रित कर सकता है।**
3.	अंकन योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार मूल्यांकन किया जाना है। यह किसी की अपनी व्याख्या या किसी अन्य विचार के अनुसार नहीं किया जाना चाहिए। अंकन योजना का नियमतः पालन किया जाना चाहिए। हालांकि, मूल्यांकन करते समय, जो उत्तर नवीनतम जानकारी या ज्ञान पर आधारित हैं अथवा नवाचारी हैं, यदि वह ठीक है उसका मूल्यांकन कर उसे उचित अंक प्रदान करें अन्यथा उन्हें अंक नहीं दिए जाएंगे। 10वीं कक्षा में, योग्यता आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय, कृपया दिए गए उत्तर को समझने का प्रयास करें और भले ही उत्तर अंकन योजना से न हो, लेकिन परीक्षार्थियों द्वारा सही योग्यता प्रदर्शित की गई हो तो उसे उचित अंक प्रदान कीजिए।
4.	प्रश्न पत्र को चार (04) खंडों में विभाजित किया गया है, अर्थात् खंड–क, खंड–ख, खंड–ग और खंड–घ। खंड–क इतिहास है, खंड–ख भूगोल है, खंड–ग राजनीति विज्ञान है और खंड–घ अर्थशास्त्र हैं। 1 - उत्तर लिखने के लिए विद्यार्थी सामाजिक विज्ञान की उत्तर–पुस्तिका को 04खंडों में विभाजित करेंगे। 2- प्रश्नों के उत्तर केवल संबंधित खंड के लिए निर्धारित स्थान के भीतर ही लिखे जाने हैं। 3- किसी एक खंड का उत्तर किसी अन्य खंड में नहीं लिखा जाना चाहिए और न ही उसके साथ मिलाया जाना चाहिए। 4- यदि उत्तर आपस में मिल जाते हैं, तो उनका मूल्यांकन नहीं किया जाएगा और कोई अंक प्रदान नहीं किए जाएंगे। 5- परिणाम घोषित होने के बाद सत्यापन या पुनर्मूल्यांकन प्रक्रिया के दौरान भी ऐसी गलतियों को स्वीकार नहीं किया जाएगा और न ही उन पर कोई विचार किया जाएगा।
5.	अंक– योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझाए गए मूल्य बिन्दु शामिल हैं । ये केवल दिशा निर्देशों की प्रकृति में है और सम्पूर्ण उत्तर नहीं हैं । विद्यार्थियों की अपनी अभिव्यक्ति हो सकती है और यदि अभिव्यक्ति सही है तो उचित अंक प्रदान किए जाने चाहिए।
6.	मुख्य परीक्षक को पहले दिन प्रत्येक मूल्यांकनकर्ता द्वारा मूल्यांकन की गई पहली पांच उत्तर पुस्तिकाओं को देखना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि मूल्यांकन अंक योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार किया गया है । यदि मूल्यांकन में अंतर है तो चर्चा एवं संवाद से उसे अंतर को समाप्त किया जाना चाहिए। मूल्यांकन के लिए रखी गई शेष उत्तर पुस्तिकाएं यह सुनिश्चित करने के बाद ही दी जाएं कि व्यक्तिगत मूल्यांकनकर्ताओं के मध्य महत्वपूर्ण अंतरों को समाप्त किया जा चुका है।
7.	जब भी उत्तर सही होगा, मूल्यांकनकर्ता (√) चिह्नित करेंगे। गलत उत्तर के लिए 'X' चिह्नित करें। बहुधा मूल्यांकनकर्ता मूल्यांकन करते समय सही प्रकार का चिन्ह नहीं लगाते जिससे यह आभास होता है कि उत्तर सही है और कोई अंक नहीं दिया गया है। यह सबसे सामान्य गलती है जो मूल्यांकनकर्ता लगातार कर रहे हैं।
8.	यदि किसी प्रश्न के भाग हैं, तो कृपया प्रत्येक भाग के लिए दाईं ओर अंक दें। प्रश्न के विभिन्न भागों के लिए दिए गए अंकों को जोड़ दिया जाना चाहिए और बाएं हाथ के मार्जिन में लिखा जाना चाहिए और घेरे में लिखा जाना चाहिए। इसका सख्ती से अनुपालन किया जाना आवश्यक है।
9.	यदि किसी प्रश्न में कोई भाग नहीं है, तो बाएं हाथ के मार्जिन में अंक दिए जाने चाहिए और उन्हें घेरे में लिखा जाना चाहिए। इसका सख्ती से अनुपालन किया जाना आवश्यक है।
10.	यदि किसी परीक्षार्थी ने एक प्रश्न को दुबारा हल किया है , तो अधिक अंक वाले प्रयास की गणना मूल्याकंन के लिए किया जाना चाहिए। अन्य उत्तर के अंक के लिए अतिरिक्त प्रश्न लिखिए।
11.	एक ही प्रकार की गलतियों के लिए संचयी प्रभाव से अंक नहीं काटा जाए। इसके लिए लिए केवल एक बार अंक काटा जाएगा।
12.	अंकों का एक पूर्ण पैमाने .....80..... (उदाहरण प्रश्न पत्र में दिए गए 70/60/50/40/30 अंक) का उपयोग किया जाना है। कृपया पूर्ण अंक देने में संकोच न करें यदि उत्तर इसके योग्य है।

13.	प्रत्येक परीक्षक को आवश्यक रूप से पूरे कार्य घंटों अर्थात प्रतिदिन 8 घंटे के लिए मूल्यांकन कार्य करना होता है और मुख्य विषयों में प्रति दिन 20 उत्तर पुस्तिकाओं और अन्य विषयों में प्रति दिन 25 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करना होता है (विवरण स्पॉट दिशानिर्देशों में दिया गया है)। यह कम किए गए पाठ्यक्रम और प्रश्न पत्र में प्रश्नों की संख्या को देखते हुए है।
14.	सुनिश्चित करें कि पूर्व में परीक्षक द्वारा की गई निम्नलिखित सामान्य प्रकार की त्रुटियों को आप नहीं दोहराएँ: • उत्तर या उसके किसी भाग को उत्तर पुस्तिका में बिना मूल्यांकन के छोड़ना। • किसी उत्तर के लिए निश्चित किए गए अंक से अधिक अंक प्रदान करना। • एक उत्तर पर दिए गए अंकों का गलत योग। • उत्तर पुस्तिका के आंतरिक पृष्ठों से शीर्षक पृष्ठ पर अंकों का गलत स्थानांतरण। • शीर्षक पृष्ठ पर प्रश्नवार गलत योग। • शीर्षक पृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का गलत योग। • गलत कुल योग। • शब्दों और अंकों में अंक का मिलान नहीं होना। • उत्तरपुस्तिका से ऑनलाइन अवॉर्ड सूची में अंकों का गलत स्थानान्तरण। • उत्तर सही के रूप में चिह्नित हैं, लेकिन अंक नहीं दिए गए हैं। (सुनिश्चित करें कि सही का निशान सही और स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। यह केवल एक पंक्ति होनी चाहिए। गलत उत्तर के लिए X के साथ भी ऐसा ही है।) • उत्तर के आधे या एक भाग को सही और शेष को गलत के रूप में चिह्नित किया गया, लेकिन कोई अंक नहीं दिया गया।
15.	उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते समय यदि उत्तर पूरी तरह से गलत पाया जाता है, तो इसे क्रॉस (X) के रूप में चिह्नित किया जाना चाहिए और शून्य (0) अंक दिए जाने चाहिए।
16.	किसी भी अमूल्यांकित हिस्से, शीर्षक पृष्ठ पर अंक न ले जाना, या उम्मीदवार द्वारा पाई गई कुल त्रुटि, मूल्यांकन कार्य में लगे सभी कर्मियों और बोर्ड की प्रतिष्ठा को भी नुकसान पहुंचाएगा। इसलिए, सभी संबंधितों की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए, यह फिर से दोहराया जाता है कि निर्देशों का सावधानीपूर्वक और विवेकपूर्ण पालन किया जाए।
17.	वास्तविक मूल्यांकन शुरू करने से पहले परीक्षकों को स्पॉट मूल्यांकन के लिए दिशा–निर्देशों में दिए गए दिशा–निर्देशों से खुद को परिचित करना चाहिए।
18.	प्रत्येक परीक्षक यह भी सुनिश्चित करेगें कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन किया गया है, अंक शीर्षक पृष्ठ पर ले जाया गया है, सही ढंग से कुल और अंकों को शब्दों में लिखा गया है।.
19.	बोर्ड उम्मीदवारों के आवेदक के अनुरोध पर उत्तर पुस्तिका की फोटोकॉपी प्राप्त करने की अनुमति देता है और संबंधित शुल्क के भुगतान पर पुनर्मूल्यांकन का अवसर भी प्रदान करता है। मुख्य परिक्षक / अतिरिक्त मुख्य परीक्षको को पुनः स्मरण कराया जाता है कि वे सुनिश्चित करे कि मूल्यांकन अंक योजना में दिए गए मूल्य बिन्दुओं के अनुसार ही किया गया है।

MARKING SCHEME
Social Science (Subject Code- 087) 2026
(PAPER CODE: 32/5/3) **SET 3**
MM:80

प्रश्न संख्या	अपेक्षित मूल्य बिन्दु	पृष्ठ संख्या	अंक
	खंड- क **(इतिहास)**		**20**
1.	**(C)** राजा राममोहन राय -संवाद कौमुदी	**121**	**1**
2.	**(D)** जेर्मेनिया **नोट : निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 3 के स्थान पर है |** **(D)** नपोलियन बोनापार्ट	**23** **6**	**1** **1**
3.	**(B)** II, IV, III, I	**31,39**	**1**
4.	**(A)** दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है |	**55**	**1**
5.	**(a) सोलहवीं सदी के बाद बहुत से यूरोपीय लोग अमेरिका क्यों गए ? स्पष्ट कीजिए |** **(i)** उन्नीसवीं सदी तक यूरोप में गरीबी और भूख का साम्राज्य था। **(ii)** शहरों में बेहिसाब भीड़ थी और बीमारियों का बोलबाला था। धार्मिक टकराव आम थे। धार्मिक असंतुष्टों को कड़ा दंड दिया जाता था। **(iii)** इस वजह से हज़ारों लोग यूरोप से भागकर अमेरिका जाने लगे। अठारहवीं सदी तक अमेरिका में अफ्रीका से पकड़ कर लाए गए गुलामों को रोपण कृषि के काम में झोंक कर यूरोपीय बाज़ारों के लिए कपास और चीनी का उत्पादन किया जाने लगा था।	**55**	**2x1 =2**

	(iv) सोलहवीं सदी से अमेरिका की विशाल भूमि और बेहिसाब फसलें व खनिज पदार्थ हर दिशा में जीवन का रूप-रंग बदलने लगे | इस कारण और भी यूरोपवासी अमेरिका जाने लगे | **(v)** आज के पेरू और मेक्सिको में मौजूद खानों से निकलने वाली कीमती धातुओं, खासतौर से चाँदी, ने भी यूरोप की संपदा को बढ़ाया और पश्चिम एशिया के साथ होने वाले उसके व्यापार को गति दी | **(vi)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |** **अथवा** **(b)प्राचीन काल के दौरान व्यापार और लम्बी दूरी की यात्राओं ने बीमारियों के प्रसार में किस प्रकार योगदान दिया? स्पष्ट कीजिए |** **(i)** प्राचीन काल से ही यात्री, व्यापारी, पुजारी और तीर्थयात्री ज्ञान, अवसरों और आध्यात्मिक शांति के लिए या उत्पीड़न / यातनापूर्ण जीवन से बचने के लिए दूर-दूर की यात्राओं पर जाते रहे हैं। **(ii)** अपनी यात्राओं में ये लोग तरह-तरह की चीजें, पैसा, मूल्य-मान्यताएँ, हुनर, विचार, आविष्कार और यहाँ तक कि कीटाणु और बीमारियाँ भी साथ लेकर आए । **(iii)** बीमारी फैलाने वाले कीटाणुओं का दूर-दूर तक पहुँचने का इतिहास भी सातवीं सदी तक ढूँढ़ा जा सकता है। **(iv)** बाद में, जब यूरोपियों ने अमेरिका को जीतने का प्रयास किया तो खास तौर से व्यापार और लंबी दूरी की यात्रा ने भी रोगों के फैलाव में योगदान दिया | **(v)** स्पेनिश और पुर्तगाली विजेता अपने साथ चेचक जैसे कीटाणु अमेरिका ले गए। स्थानीय निवासियों में इन रोगों से बचने की रोग-प्रतिरोधी क्षमता नहीं थी। इसने पूरे के पूरे समुदायों को ख़त्म कर डाला। **(vi)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु| **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**	**53-55**	**2x1 =2**
6.	**(a)"मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ रची |" उदाहरणों सहित इस कथन की व्याख्या कीजिए |**	**115-116**	**3x1 =3**

	(i) छपाई के चलते ज्ञानोदय के चिंतकों के विचारों का प्रसार हुआ। उन्होंने रीति-रिवाजों की जगह विवेक के शासन पर बल दिया, और माँग की कि हर चीज़ को तर्क और विवेक की कसौटी पर ही कसा जाए। **(ii)** उन्होंने चर्च की धार्मिक और राज्य की निरंकुश सत्ता पर प्रहार किया । वॉल्तेयर और रूसो के लेखन का व्यापक पाठक वर्ग था| **(iii)** छपाई ने वाद-विवाद-संवाद की नयी संस्कृति को जन्म दिया। सारे पुराने मूल्य, संस्थाओं और कायदों पर आम जनता के बीच बहस-मुबाहिसे हुए और उनके पुनर्मूल्यांकन का सिलसिला शुरू हुआ । तर्क की ताक़त से परिचित यह नयी 'पब्लिक' धर्म और आस्था को प्रश्नांकित करने का मोल समझ चुकी थी। इस तरह बनी 'सार्वजनिक दुनिया' से सामाजिक क्रांति के नए विचारों का सूत्रपात हुआ । **(iv)** 1780 के दशक तक राजशाही और उसकी नैतिकता का मज़ाक उड़ाने वाले साहित्य का ढेर लग चुका था। इस प्रक्रिया में सामाजिक व्यवस्था को लेकर तमाम सवाल खड़े किए गए। **(v)** कार्टूनों और कैरिकेचरों (व्यंग्य चित्रों) में यह भाव उभरता था कि जनता तो मुश्किलों में फँसी है जबकि राजशाही भोग-विलास में डूबी हुई है। भूमिगत घूमने वाले इस साहित्य ने लोगों को राजतंत्र के ख़िलाफ़ भड़काया । **(vi)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु |		
	किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है | **अथवा** **(b)"उन्नीसवीं सदी के दौरान यूरोप में छापेखाने की तकनीक में अनेक नवाचार हुए |" उदाहरणों सहित इस कथन की व्याख्या कीजिए |** **(i)** उन्नीसवीं सदी के दौरान छापेखाने की तकनीक में लगातार सुधार हुए जिससे छापेखाने की गुणवत्ता और मात्रा दोनों में बढ़ोत्तरी हुई । **(ii)** उन्नीसवीं सदी के मध्य तक न्यूयॉर्क के रिचर्ड एम. हो. ने शक्ति चालित बेलनाकार प्रेस को कारगर बना लिया था। इससे प्रति घंटे 8000 शीट या ताव छप सकते थे। **(iii)** उन्नीसवीं सदी के अंत तक ऑफसेट प्रेस आ गया था, जिससे एक साथ छह रंग की छपाई मुमकिन थी। **(iv)** बीसवीं सदी के शुरू से ही बिजली से चलनेवाले प्रेस के बल पर छपाई का काम बड़ी तेज़ी से होने लगे। **(v)** एक-दो और चीजें हुईं। काग़ज़ डालने की विधि में सुधार हुआ, प्लेट की गुणवत्ता बेहतर हुई, स्वचालित पेपर- रील और रंगों के लिए फोटो-	**118**	**3X1 =3**

	विद्युतीय नियंत्रण भी काम में आने लगे। इस तरह कई छोटी-छोटी मशीनी इकाइयों में कुल सुधार की बदौलत छपे हुए पन्ने का रंग-रूप ही बदल गया । **(vi)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**		
7.	**(a) यूनाइटेड किंगडम ऑफ़ ग्रेट ब्रिटेन के गठन की प्रक्रिया की व्याख्या कीजिए |** **(i)** ब्रिटेन में राष्ट्र राज्य का निर्माण अचानक हुई कोई उथल-पुथल या क्रांति का परिणाम नहीं था | यह एक लम्बी चलने वाली प्रक्रिया का नतीजा था | **(ii)** अठारहवीं सदी के पहले ब्रितानी राष्ट्र नहीं था | ब्रितानी द्वीपसमूह में रहने वाले लोगों-अंग्रेज, वेल्श, स्कॉट या आयरिश- की मुख्य पहचान नृजातीय थी | इन सभी जातीय समूहों की अपनी सांस्कृतिक और राजनीतिक परंपराएँ थीं। **(iii)** एक लंबे टकराव और संघर्ष के बाद आंग्ल संसद ने 1688 में राजतंत्र से ताक़त छीन ली थी। इस संसद के माध्यम से एक राष्ट्र राज्य का निर्माण हुआ जिसके केंद्र में इंग्लैंड था । **(iv)** इंग्लैंड और स्कॉटलैंड के बीच ऐक्ट ऑफ़ यूनियन (1707) से 'यूनाइटेड किंग्डम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन' का गठन हुआ। इससे इंग्लैंड, व्यवहार में स्कॉटलैंड पर अपना प्रभुत्व जमा पाया। **(v)** एक ब्रितानी पहचान के विकास का अर्थ यह हुआ कि स्कॉटलैंड की खास संस्कृति और राजनीतिक संस्थानों को योजनाबद्ध तरीके से दबाया गया। स्कॉटिश हाइलैंड्स के निवासी जिन कैथलिक कुलों ने जब भी अपनी आज़ादी को व्यक्त करने का प्रयास किया उन्हें ज़बरदस्त दमन का सामना करना पड़ा। स्कॉटिश हाइलैंड्स के लोगों को अपनी गेलिक भाषा बोलने या अपनी राष्ट्रीय पोशाक पहनने की मनाही थी। उनमें से बहुत 'सारे लोगों को अपना वतन छोड़ने पर मजबूर किया गया। **(vi)** आयरलैंड का भी कुछ ऐसा ही हश्र हुआ। वह देश कैथलिक और प्रोटेस्टेंट धार्मिक गुटों में गहराई में बँटा हुआ था। अंग्रेजों ने आयरलैंड में प्रोटेस्टेंट धर्म मानने वालों को बहुसंख्यक कैथलिक देश पर प्रभुत्व बढ़ाने में सहायता की। **(vii)** ब्रितानी प्रभाव के विरुद्ध हुए कैथलिक विद्रोहों को निर्ममता से कुचल दिया गया। वोल्फ़ टोन और उसकी यूनाइटेड आयरिशमेन (1798) की अगुवाई में हुए असफल विद्रोह के बाद 1801 में आयरलैंड को बलपूर्वक यूनाइटेड किंग्डम में शामिल कर लिया गया।	**22**	**5x1 =5**

	(viii) एक नए 'ब्रितानी राष्ट्र' का निर्माण किया गया जिस पर हावी आंग्ल संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया गया। नए ब्रिटेन के प्रतीक चिह्नों, ब्रितानी झंडा (यूनियन जैक) और राष्ट्रीय गान (गॉड सेव अवर नोबल किंग) को खूब बढ़ावा दिया गया और पुराने राष्ट्र इस संघ में मातहत सहयोगी के रूप में ही रह पाए । **(ix)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु| **किन्हीं पांच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |** **अथवा**		
	(b) उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान जर्मनी के एकीकरण की प्रक्रिया की व्याख्या कीजिए | **(i)** 1848 के बाद यूरोप में राष्ट्रवाद का जनतंत्र और क्रांति से अलगाव होने लगा । **(ii)** राज्य की सत्ता को बढ़ाने और पूरे यूरोप पर राजनीतिक प्रभुत्व हासिल करने के लिए रूढ़िवादियों ने अकसर राष्ट्रवादी भावनाओं का इस्तेमाल किया। **(iii)** 1848 में जर्मन महासंघ के विभिन्न इलाक़ों को जोड़ कर एक निर्वाचित संसद द्वारा शासित राष्ट्र राज्य बनाने का प्रयास किया था। मगर राष्ट्र निर्माण की यह उदारवादी पहल राजशाही और फ़ौज की ताक़त ने मिलकर दबा दी। उनका प्रशा के बड़े भूस्वामियों (Junkers) ने भी समर्थन किया। **(iv)** उसके पश्चात प्रशा ने राष्ट्रीय एकीकरण के आंदोलन का नेतृत्व सँभाल लिया। उसका प्रमुख मंत्री, ऑटो वॉन बिस्मार्क इस प्रक्रिया का जनक था जिसने प्रशा की सेना और नौकरशाही की मदद ली। **(v)** सात वर्ष के दौरान ऑस्ट्रिया, डेन्मार्क और फ्रांस से तीन युद्धों में प्रशा को जीत हुई और एकीकरण की प्रक्रिया पूरी हुई। **(vi)** जनवरी 1871 में, वर्साय में हुए एक समारोह में प्रशा के राजा विलियम प्रथम को जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया। **(vii)** जर्मन राज्यों के राजकुमारों, सेना के प्रतिनिधियों और प्रमुख मंत्री ऑटो वॉन बिस्मार्क समेत प्रशा के महत्त्वपूर्ण मंत्रियों की एक बैठक वर्साय के महल के बेहद ठंडे शीशमहल (हॉल ऑफ़ मिरर्स) में हुई। सभा ने प्रशा काइज़र विलियम प्रथम के नेतृत्व में नए जर्मन साम्राज्य की घोषणा की। **(viii)** जर्मनी में राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में प्रशा राज्य की शक्ति का प्रभुत्व प्रदर्शित हुआ था। **(ix)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु । **किन्हीं पांच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**	**19**	**5x1 =5**

8.	**दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**	**48**	**1+1 +2= 4**

सामूहिक अपनेपन का भाव

जैसे-जैसे राष्ट्रीय आन्दोलन आगे बढ़ा, राष्ट्रवादी नेता लोगों को एकजुट करने और उनमें राष्ट्रवाद की भावना भरने के लिए इस तरह के चिन्हों और प्रतीकों के बारे में और ज्यादा जागरूक होते गए। इतिहास की पुनर्व्याख्या राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने का एक और साधन थी। उन्नीसवीं सदी के अंत तक आते-आते बहुत सारे भारतीय यह महसूस करने लगे थे कि राष्ट्र के प्रति गर्व का भाव जगाने के लिए भारतीय इतिहास को अलग ढंग से पढ़ाया जाना चाहिए। अंग्रेजों की नज़र में भारतीय पिछड़े हुए और आदिम लोग थे जो अपना शासन खुद नहीं संभाल सकते। इसके जवाब में भारत के लोग अपनी महान उपलब्धियों की खोज में अतीत की ओर देखने लगे। उन्होंने उस गौरवमयी प्राचीन युग के बारे में लिखना शुरू कर दिया जब कला और वास्तुशिल्प, विज्ञान और गणित, धर्म और संस्कृति, कानून और दर्शन, हस्तकला और व्यापार फल-फूल रहे थे। उनका कहना था कि इस महान युग के बाद पतन का समय आया और भारत को गुलाम बना लिया गया। इस राष्ट्रवादी इतिहास में पाठकों को अतीत में भारत की महानता व उपलब्धियों पर गर्व करने और ब्रिटिश शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाने का आव्हान किया जाता था।

8.1 स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रतीकों ने भारतीयों को एकजुट करने में कैसे मदद की? 1

(i) भारत माता जैसे प्रतीक के प्रति भक्ति को भारत में राष्ट्रवाद का प्रमाण माना जाने लगा।

(ii) गीतों, संगीत और कविताओं के रूप में लोक परंपरा को प्रोत्साहित किया गया ताकि हमारी राष्ट्रीय पहचान की खोज की जा सके और अपने अतीत पर गर्व की भावना को पुनर्स्थापित किया जा सके।

(iii) राष्ट्रीय ध्वज को ले जाना, मार्च के दौरान इसे ऊँचा उठाना, विरोध का प्रतीक बन गया।

(iv) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु

किसी एक बिंदु की व्याख्या अपेक्षित है।

8.2 राष्ट्रवादियों को भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता क्यों महसूस हुई? 1

(i) अपने लेखन में अंग्रेज भारतियों को पिछड़े और आदिम मानते थे जो अपना शासन खुद नहीं संभाल सकते। इसके जवाब में भारत के लोग अपनी महान उपलब्धियों की खोज में अतीत की ओर देखने लगे।

(ii) इस राष्ट्रवादी इतिहास में पाठकों को अतीत में भारत की महानता व उपलब्धियों पर गर्व करने और ब्रिटिश शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाने का आव्हान किया जाता था।

(iii) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु

किसी एक बिंदु की व्याख्या अपेक्षित है।

8.3 राष्ट्रवादी इतिहास में भारत के अतीत और वर्तमान को कैसे चित्रित किया गया था? 2

	(i) राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने उस गौरवमयी प्राचीन युग के बारे में लिखना शुरू कर दिया जब कला और वास्तुशिल्प, विज्ञान और गणित, धर्म और संस्कृति, कानून और दर्शन, हस्तकला और व्यापार फल-फूल रहे थे | **(ii)** उनका कहना था कि इस महान युग के बाद पतन का समय आया और भारत को गुलाम बना लिया गया | **(iii)** इस राष्ट्रवादी इतिहास में पाठकों को अतीत में भारत की महानता व उपलब्धियों पर गर्व करने और ब्रिटिश शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाने का आव्हान किया जाता था **(iv)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु| **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**		
9.	**नोट- कृपया सलंग्न मानचित्र देखें |** **नोट : निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिएप्रश्न संख्या 9 के स्थान पर हैं:** **(9.1) उस स्थान का नाम लिखिए जहाँ से गांधीजी ने नील की खेती करने वाले किसानों के लिए सत्याग्रह शुरू किया | 1** चंपारण **(9.2)महाराष्ट्र में उस स्थान का नाम लिखिए जहाँ 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ | 1** नागपुर		**2X1 =2**
	खंड -ख **(भूगोल)**		**20**
10.	**(D)** भूमि जहाँ एक कृषि वर्ष से खेती न की गई हो |	**4**	**1**
11.	**(C)** उर्जा खनिज	**43**	**1**
12.	**(C)** चावल, ज्वार, मक्का	**32**	**1**
13.	**(B)** मध्य प्रदेश	**15**	**1**
14.	**(B)** काली मृदा	**7**	**1**
15.	(a) (b) (c) (d) **(C)** (iv) (iii) (ii) (i)	**15**	**1**
16.	**भारतीय कृषि में सुधार के लिए सरकार द्वारा किए गए उपायों को स्पष्ट कीजिए |**	**38-39**	**2x1 =2**

	(i) स्वतंत्रता के पश्चात् देश में संस्थागत सुधार करने के लिए जोतों की चकबंदी, सहकारिता तथा ज़मींदारी आदि समाप्त करने को प्राथमिकता दी गई | प्रथम पंचवर्षीय योजना में भूमि सुधार मुख्य लक्ष्य था | **(ii)** बहु-उद्देशीय नदी परियोजनाएँ शुरू की गई और सिंचाई, बिजली और बाढ़ नियंत्रण आदि के लिए बाँध तथा नहरों का निर्माण किया गया | **(iii)** पैकेज टेक्नोलॉजी पर आधारित हरित क्रांति तथा श्वेत क्रांति (ऑपरेशन फ्लड) जैसी कृषि सुधार के लिए कुछ रणनीतियां आरम्भ की गई थी | **(iv)** 1980 तथा 1990 के दशकों में व्यापक भूमि विकास कार्यक्रम शुरू किया गया जो संस्थागत और तकनीकी सुधारों पर आधारित था | **(v)** सूखा, बाढ़, चक्रवात, आग तथा बीमारी के लिए फसल बीमा के प्रावधान किए गए | **(vi)** किसानों को कम दर पर पर ऋण सुविधाएँ प्रधान करने के लिए ग्रामीण बैंकों, सहकारी समितियों तथा बैंकों की स्थापना की गई | **(vii)** किसानों के लाभ के लिए भारत सरकार ने 'किसान क्रेडिट कार्ड'(के.सी.सी.) और व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना(पीएआईएस) भी शुरू की गई है | **(viii)** आकाशवाणी और दूरदर्शन पर किसानों के लिए मौसम की जानकारी के बुलेटिन और कृषि कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं | **(ix)** किसानों को बिचौलियों और दलालों के शोषण से बचाने के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य और कुछ महत्त्वपूर्ण फसलों के लाभदायक खरीद की सरकार घोषणा करती है | **(x)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**		
17.	**(a) खनिजों की मुख्य विशेषताओं की व्याख्या कीजिए |** **(i)** खनिज प्रकृति में अनेक रूपों में पाए जाते हैं, इसमें सबसे कठोर हीरा व नरम चूना तक सम्मिलित है । **(ii)** खनिज सामान्यतः "अयस्कों" में पाए जाते हैं, जो अन्य अशुद्धियों और तत्वों के साथ मिश्रित होते हैं। **(iii)** खनिज धातु के रूप में हो सकते हैं - लौह अयस्क, ताँबा, चाँदी इत्यादि, और अधातु के रूप में – अभ्रक, कोयला, नमक, पोटैशियम और चूना पत्थर। **(iv)** धात्विक खनिज लौह हो सकते हैं जैसे - लौह अयस्क, मैंगनीज, निकल, कोबाल्ट इत्यादि और अलौह जैसे - ताँबा, टिन, जस्ता, बॉक्साइट। **(v)** खनिज बहुमूल्य भी हो सकते हैं जैसे सोना और चाँदी। **(vi)** कुछ खनिज ऊर्जा संसाधन हैं जैसे- कोयला, पेट्रोलियम, और प्राकृतिक गैस। **(vii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु।	**42-44**	**5x1=5**

किन्हीं पांच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |

अथवा

(b)उर्जा के पारंपरिक और गैर-पारंपरिक स्रोतों के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए|

50-54 | **5x1=5**

उर्जा के पारंपरिक स्रोत	**उर्जा गैर-पारंपरिक स्रोत**
(i)उर्जा के पारंपरिक स्रोतों में शामिल हैं-लकड़ी, उपले, कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस तथा विद्युत (दोनों जल विद्युत व ताप विद्युत)	(i)उर्जा के गैर-पारंपरिक स्रोतों में शामिल हैं-सौर, पवन, ज्वारीय, भू-तापीय, बायोगैस तथा परमाणु उर्जा |
(ii)ये संसाधन सीमित हैं क्योंकि इनकी मात्रा सीमित है |	(ii)ये स्रोत असमाप्य प्राय हैं |
(iii)जल को छोड़कर ये स्रोत पर्यावरण प्रदूषण उत्पन्न करते हैं |	(iii)ये स्रोत पर्यावरण हितैषी होते हैं |
(iv)ये उर्जा के महंगे स्रोत हैं |	(iv)इन स्रोतों में एक बार निवेश की आवश्यकता होती है |
(v)जल को छोड़कर सभी स्रोत अवशिष्ट पदार्थ छोड़ते हैं |	(v)कोई अवशिष्ट पदार्थ नहीं निकलता है |
(vi)कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु |	

अंतर के किन्हीं पांच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |

18. **दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए |** **23** **1+1+2=4**

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना

बाढ़ों से न केवल जान और माल का नुकसान हुआ अपितु बृहत् स्तर पर मृदा अपरदन भी हुआ | बाँध के जलाशय पर तलछट जमा होने का अर्थ यह भी है कि यह तलछट जो कि एक प्राकृतिक उर्वरक है बाढ़ के मैदानों तक नहीं पहुँचती जिसके कारण भूमि निम्नीकरण की समस्याएँ बढती हैं | यह भी माना जाता है कि बहुउद्देशीय योजनाओं के कारण भूकंप आने की संभावना भी बढ़ जाती है और अत्यधिक जल के उपयोग से जल-जनित बीमारियाँ, फसलों में कीटाणु-जनित बीमारियाँ और प्रदूषण फैलते हैं |

सिंचाई ने कई क्षेत्रों में फसल प्रारूप परिवर्तित कर दिया है जहाँ जलगहन और वाणिज्य फसलों की ओर आकर्षित हो रहे हैं | इससे मृदाओं के लवणीकरण जैसे गंभीर पारिस्थितिकीय परिणाम हो सकते हैं |

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना देश के सभी कृषि खेतों के लिए सुरक्षात्मक सिंचाई के कुछ साधनों तक पहुँच सुनिश्चित करती है, जिससे वांछित ग्रामीण समृद्धि आती है | इस कार्यक्रम के कुछ व्यापक उद्देश्य हैं, जैसे खेत में पानी की वास्तविक उपलब्धता को बढ़ाना और सुनिश्चित सिंचाई (हर खेत को पानी) के तहत बुवाई योग्य क्षेत्र का विस्तार करना, अपव्यय को कम करने और अवधि और सीमा दोनों

	में उपलब्धता बढ़ाने के लिए खेत के उपयोग की दक्षता में सुधार करना, सिंचाई और अन्य जल बचत प्रौधोगिकियाँ (प्रति बूँद अधिक फसल) और सतत जल सरंक्षण प्रणालियों का अपनाना आदि **18.1 भूमि निम्नीकरण में बाढ़ की भूमिका को स्पष्ट कीजिए| 1** **(i)** बाढ़ से मृदा अपरदन होता है | **(ii)** बाँध के कारण जलाशय पर तलछट जमा हो जाता है जिसका अर्थ यह भी है कि यह तलछट जो कि एक प्राकृतिक उर्वरक है बाढ़ के मैदानों तक नहीं पहुँचती जिसके कारण भूमि निम्नीकरण की समस्याएँ बढ़ती हैं| **(iii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु| **किसी एक बिन्दु की व्याख्या अपेक्षित है |** **18.2 सिंचाई ने फसल प्रारूप को कैसे बदल दिया है? 1** **(i)** किसान जलगहन फसलों की ओर आकर्षित हो रहे हैं| **(ii)** किसान वाणिज्य फसलों की ओर आकर्षित हो रहे हैं| **(iii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु **|** **किसी एक बिन्दु की व्याख्या अपेक्षित है |** **18.3 'प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना' के किन्हीं दो उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए| 2** **(i)** खेत में पानी की वास्तविक उपलब्धता को बढ़ाना **|** **(ii)** सुनिश्चित सिंचाई (हर खेत को पानी) के तहत बुवाई योग्य क्षेत्र का विस्तार करना**|** **(iii)** अपव्यय को कम करने के लिए खेत में जल के उपयोग की दक्षता में सुधार करना**|** **(iv)** सतत जल सरंक्षण प्रणालियों का अपनाना**|** **(v)** जल के अपव्यय को कम करने और सिंचाई की दक्षता को बढ़ाने के लिए ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई को अपनाना**|** **(vi)** सिंचाई और अन्य जल बचत प्रौधोगिकियाँ (प्रति बूँद अधिक फसल) आदि **|** **(vii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु **|** **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**		
19.	**नोट- कृपया इस अंक योजना के अंतिम पृष्ठ पर सलंग्न मानचित्र को देखिए |**		**3x1 =3**

	नोट: निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 19 के स्थान पर है : **किन्हीं तीन के उत्तर लिखिए |** **(i) सतलुज नदी पर बने बाँध का नाम लिखिए | 1** भाखड़ा नांगल **(ii) उस स्थान का नाम लिखिए जहाँ गुजरात में आणविक उर्जा संयंत्र स्थित है | 1** काकरापारा **(iii) उस स्थान का नाम लिखिए जहाँ उत्तर प्रदेश में सॉफ्टवेयर प्रौधोगिकी पार्क स्थित है | 1** नॉएडा **(iv) उस स्थान का नाम लिखिए जहाँ महाराष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय वायु पत्तन स्थित है | 1** मुंबई / छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाई पत्तन		
	खंड-ग **(राजनीति विज्ञान)**		**20**
20.	**(B)** केवल I, II और IV सही हैं |	**25**	**1**
21.	**(A)** भारतीय जनता पार्टी और आम आदमी पार्टी	**56**	**1**
22.	**(C)** राष्ट्रों के बीच धन का असमान वितरण **नोट : निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 3 के स्थान पर है |** **(C)** भारत	**67** **63-72**	**1**
23.	**(A)** दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है |	**4**	**1**
24.	**विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में महिलाओं को बढ़ावा देने के कोई दो तरीके सुझाइए |** **(i)** महिलाओं को विद्यालय जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। **(ii)** विद्यालयों और सरकार को व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। **(iii)** महिलाओं को पौष्टिक आहार प्रदान किया जाना चाहिए। **(iv)** किसी भी कार्य में महिलाओं को पुरुषों के समान वेतन दिया जाना चाहिए। **(v)** महिलाओं को आसान ऋण सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए।	**32-35**	**2x1 =2**

	(vi) महिलाओं को विभिन्न पेशों को अपनाने में सक्षम बनाने के लिए अधिक योजनाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। **(vii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **कोई दो सुझाव अपेक्षित हैं |**		
25.	**"किसी अन्य विकल्प की तुलना में लोकतंत्र शासन का बेहतर रूप है |" इस कथन की परख कीजिए |** **(i)** नागरिकों के बीच समानता को बढ़ावा देता है | **(ii)** व्यक्ति की गरिमा को बढ़ाता है | **(iii)** निर्णय लेने की गुणवत्ता में सुधार करता है | **(iv)** संघर्षों को सुलझाने का एक तरीका प्रदान करता है | **(v)** गलतियों को सुधारने की जगह देता है। **(vi)** नागरिकों के पास अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होती है। **(vii)** उनके पास मतदान करने और अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार भी है। यह वैध सरकार होती है | **(viii)** लोकतंत्र स्वयं की सरकार बनाने की स्वतंत्रता प्रदान करता है जबकि तानाशाही स्व-निर्मित हितों पर आधारित होती है। **(ix)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु । **किन्हीं दो बिन्दुओं की परख अपेक्षित है |**	**63-72**	**2x1 =2**
26.	**भारतीय संघवाद में 'त्रि-सूचियों की प्रणाली' कैसे कार्य करती है ? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए |** **(i)** भारत के संविधान ने स्पष्ट रूप से संघ सरकार और राज्य सरकारों के बीच विधायी शक्तियों के त्रि-स्तरीय वितरण का प्रावधान किया है। इसमें तीन सूचियाँ हैं - संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची। **(ii)** संघ सूची में प्रतिरक्षा, विदेशी मामले, बैंकिंग, संचार और मुद्रा जैसे राष्ट्रीय महत्व के विषय हैं। **(iii)** पूरे देश के लिए इन मामलों में एक तरह की नीतियों की ज़रूरत है। इसी कारण इन विषयों को संघ सूची में डाला गया है। संघ सूची में वर्णित विषयों के बारे में कानून बनाने का अधिकार सिर्फ़ केंद्र सरकार को है। **(iv)** राज्य सूची में पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि और सिंचाई जैसे प्रांतीय और स्थानीय महत्व के विषय हैं। राज्य सूची में वर्णित विषयों के बारे में सिर्फ़ राज्य सरकार ही कानून बना सकती है। **(v)** समवर्ती सूची में शिक्षा, वन, मज़दूर संघ, विवाह, गोद लेना और उत्तराधिकार जैसे वे विषय हैं जो केंद्र के साथ राज्य सरकारों की साझी दिलचस्पी में आते हैं |	**16-17**	**3x1 =3**

	(vi) इन विषयों पर कानून बनाने का अधिकार केंद्र सरकार और राज्य सरकारों दोनों को है। यदि दोनों के कानूनों में कोई टकराव हो, तो केंद्र सरकार द्वारा बनाया गया कानून ही मान्य होता है । **(vii)** उपरोक्त तीन सूचियों के अलावा, बाकी बचे विषयों से संबंधित एक अलग प्रावधान है जो इन तीन सूचियों में विशेष रूप से उल्लेखित नहीं हैं। इसमें कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर, साइबर कानून, सूचना प्रौद्योगिकी जैसे विषय शामिल हैं। हमारे संविधान के अनुसार, केंद्र सरकार के पास इन बाकी बचे विषयों पर कानून बनाने का अधिकार है। **(viii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु । **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**		
27.	**(a)सुशासन सुनिश्चित करने में राजनीतिक दलों की भूमिका का विश्लेषण कीजिए |** **(i)** राजनीतिक दल चुनाव लड़ते हैं और नागरिकों को अपनी सरकार चुनने का अवसर देते हैं | **(ii)** जो दल सरकार बनाते हैं वे अलग-अलग नीतियाँ और कार्यक्रम बनाती हैं और नागरिकों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं | इस प्रकार, वे एक व्यवस्थित प्रशासन सुनिश्चित करते हैं | **(iii)** दल न केवल सरकार बनाते और चलाते हैं; वे नेता चुनते हैं और उनको प्रशिक्षित करती हैं | जब वे सरकार का हिस्सा बनते हैं तो वे सुशासन को सुनिश्चित करते हैं | **(iv)** चुनाव हारने वाले दल शासक दल के विरोधी पक्ष की भूमिका निभाते हैं; सरकार की गलत नीतियों और असफलताओं की आलोचना करने के साथ वह अपनी अलग राय भी रखते हैं | यह सरकार को अपनी शक्तियों के दुरुपयोग करने से रोकता है | इससे देश में सुशासन स्थापित होता है | **(v)** जनमत-निर्माण में दल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं | वे मुद्दों को उठाते और उनपर बहस करते हैं | **(vi)** दलों द्वारा बनी विधायिकाओं में पार्टियाँ देश के लिए कानून बनाने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। दक्ष प्रशासन के लिए कानून निर्माण अति आवश्यक है | **(vii)** दल ही सरकारी मशीनरी और सरकार द्वारा चलाये जाने वाले कल्याणकारी कार्यक्रमों तक लोगों की पहुँच बनाते हैं। इससे सार्वजानिक सेवाएँ लोगों तक आसानी से पहुँच पाती हैं | **(viii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं पांच बिन्दुओं का विश्लेषण अपेक्षित है |** **अथवा** **(b) भारत में राजनीतिक दलों की आवश्यकता का विश्लेषण कीजिए |**	**48-49**	**5x1 =5**

	(i) भारत में राजनीतिक दलों की आवश्यकता प्रतिनिधित्व पर आधारित लोकतान्त्रिक व्यवस्था के उभार के साथ जुड़ा हुआ है | **(ii)** राजनीतिक दल चुनाव लड़ते हैं | चुनाव के बिना, नागरिक अपनी खुद की सरकार चुनने में सक्षम नहीं होंगे। यह लोगों द्वारा, लोगों के लिए और लोगों की सरकार के लोकतांत्रिक विचार के खिलाफ जाता है। **(iii)** राजनीतिक दलों के अभाव में भले ही चुनाव आयोजित किए जाएँ, हर उम्मीदवार स्वतंत्र होगा, नीतिगत निर्णय केवल उस विशेष निर्वाचन क्षेत्र तक सीमित होंगे। स्वतंत्र प्रतिनिधि अपने स्वयं के निर्वाचन क्षेत्र के प्रति जिम्मेदार होंगे और कोई भी पूरे देश के लिए उत्तरदायी या जिम्मेदार नहीं होगा। **(iv)** वे राजनीतिक दल जो सरकार नहीं बनाते, वे विपक्ष का गठन करते हैं। विपक्ष विभिन्न विचार व्यक्त करता है, वे सरकार की असफलताओं की आलोचना करते हैं और लोगों को लामबंद करते हैं। **(v)** चुनाव के बाद राजनीतिक दलों द्वारा विधायिका का निर्माण किया जाता है | ये लोगों की जरूरतों के अनुसार विधि का निर्माण करते हैं | **(vi)** दल नेताओं की भर्ती करते हैं और उन्हें अच्छे शासन को सक्षम बनाने के लिए प्रशिक्षित करते हैं | दलों के बिना अच्छे नेताओं की कमी होगी | इसलिए हमें राजनीतिक दलों की आवश्यकता है | **(vii)** राजनीतिक दल अपने सदस्यों, कार्यकर्ताओं, दबाव समूहों और आंदोलनों की मदद से जनमत को आकार देने में भी मदद करते हैं, जहाँ नागरिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। **(viii)** राजनीतिक दल नागरिकों को सरकारी मशीनरी और कल्याण योजनाओं तक पहुँच भी प्रदान करते हैं। **(ix)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं पांच बिन्दुओं का विश्लेषण अपेक्षित है |**	**48-49**	**5x1=5**
28.	**दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए |** **सत्ता की साझेदारी के रूप** *राजनीतिक सत्ता का बंटवारा नहीं किया जा सकता- इसी धारणा के विरुद्ध सत्ता की साझेदारी के विचार सामने आया था | लम्बे समय से यही मान्यता चली आ रही थी कि सरकार की सारी शक्तियाँ एक व्यक्ति या किसी खास स्थान पर रहने वाले व्यक्ति-समूह के हाथ में रहनी चाहिए | अगर फैसले लेने की शक्ति बिखर गई तो तुरंत फैसले लेना और उन्हें लागू करना संभव नहीं होगा | लेकिन, लोकतंत्र के प्रादुर्भाव के साथ यह धारणा बदल गई | लोकतंत्र का एक बुनियादी सिद्धांत है कि जनता ही सारी राजनैतिक शक्ति का स्रोत है | इसमें लोग स्व-शासन की संस्थाओं के माध्यम से अपना शासन चलाते हैं | एक अच्छे लोकतान्त्रिक शासन में समाज के विभिन्न समूहों और उनके विचारों को उचित सम्मान दिया जाता है और सार्वजानिक नीतियाँ तय करने में सबकी बातें शामिल होती हैं | इसलिए उसी लोकतान्त्रिक शासन को अच्छा माना जाता है जिसमें ज़्यादा से ज़्यादा नागरिकों को राजनीतिक सत्ता में हिस्सेदार बनाया जाए |*	**8**	**1+1+2=4**

28.1 सत्ता की साझेदारी राजनीतिक स्थिरता को कैसे बढ़ावा देती है? 1

(i) सत्ता की साझेदारी के माध्यम से लोग सीधे राजनीतिक प्रणाली में भाग लेते हैं। इससे सरकार को वैधता और स्थिरता मिलती है।

(ii) समाज में मौजूद विभिन्न समूहों और दृष्टिकोणों को उचित सम्मान दिया जाता है, जिससे संघर्ष और हिंसा की संभावना कम होती है। यह राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करता है।

(iii) सत्ता में साझेदारी प्रत्येक व्यक्ति को सार्वजनिक नीतियों को आकार देने में अपनी आवाज़ देने का अवसर देती है। इस प्रकार, यह राजनीतिक व्यवस्था की स्थिरता सुनिश्चित करती है।

(iv) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु|

किसी एक बिंदु की व्याख्या अपेक्षित है |

28.2 दवाब समूह किस प्रकार सत्ता की साझेदारी व्यवस्था का हिस्सा हैं ? 1

(i) लोकतंत्र में व्यापारी, उद्योगपति, किसान और औद्योगिक मजदूर जैसे कई संगठित हित-समूह होते हैं|

(ii) सरकार की विभिन्न समितियों में सीधी भागीदारी करके या नीतियों पर अपने सदस्य-वर्ग के लाभ के लिए दबाव बनाकर ये समूह सत्ता में भागीदारी करते हैं|

(iii) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु|

किसी एक बिंदु की व्याख्या अपेक्षित है |

28.3 सत्ता की साझेदारी लोकतंत्र की भावना में कैसे योगदान करती है ? 2

(i) सत्ता की साझेदारी लोकतंत्र की आत्मा है |

(ii) लोकतंत्र का मतलब ही होता है कि जो लोग इस शासन-व्यवस्था के अंतर्गत हैं उनके बीच सत्ता को बाँटा जाए और ये लोग इसी ढर्रे में रहें |

(iii) सत्ता की साझेदारी सरकार को वैधता प्रदान करती है | वैध सरकार वही है जिसमें अपनी भागीदारी के माध्यम से सभी समूह शासन व्यवस्था से जुड़ते हैं |

(iv) सत्ता का बंटवारा ठीक है क्योंकि इससे विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच टकराव का अंदेशा कम हो जाता है | चूँकि सामाजिक टकराव आगे बढ़कर अक्सर हिंसा और राजनीतिक अस्थिरता का रूप ले लेता है | इसलिए सत्ता की साझेदारी राजनीतिक व्यवस्था की स्थिरता के लिए आवश्यक है |

(v) सत्ता की साझेदारी सरकार में लोगों की सीधी भागीदारी सुनिश्चित करती है, सार्वजनिक मुद्दों पर सबकी राय ली जाती है और इस प्रकार यह बहुसंख्यकों की निरंकुशता को रोकती है |

(vi) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु|

किन्हीं दो बिन्दुओं कि व्याख्या अपेक्षित है |

	खंड- घ **(अर्थशास्त्र)**		**20**
29.	**(A)** निजी क्षेत्रक	**33**	**1**
30.	**(A)** 12	**10**	**1**
31.	**(C)** देश में विदेशी व्यापार को विनियमित करना |	**64**	**1**
32.	**(B)** ऋण की लागत	**44-45**	**1**
33.	**(D)** भूमिगत जल	**14**	**1**
34.	**(A)** एक	**10**	**1**
35.	**"तकनीक में प्रगति ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को उत्प्रेरित किया है |" उपयुक्त तर्कों द्वारा इस कथन को न्यायसंगत ठहराइए |** **(i)** तकनीक/प्रौधोगिकी में तीव्र उन्नति वह मुख्य कारक है जिसने वैश्वीकरण कि प्रक्रिया को उत्प्रेरित किया | जैसे, विगत पचास वर्षों में परिवहन प्रौधोगिकी में बहुत उन्नति हुई है | इसने लम्बी दूरियों तक वस्तुओं को तीव्रतर आपूर्ति को कम लागत पर संभव किया है | **(ii)** दूरसंचार सुविधाओं (टेलीग्राफ, टेलीफोन, मोबाइल फोन एवं फैक्स) का विश्व पर एक-दूसरे से संपर्क करने, सूचनाओं को तत्काल प्राप्त करने और दूरवर्ती क्षेत्रों से संवाद करने में प्रयोग किया जाता है | **(iii)** संचार उपग्रहों के कारण सूचना और संचार तकनीक में और बढ़ोत्तरी हुई है | **(iv)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**	**63-67**	**3x1 =3**
36.	**ऋण की विभिन्न शर्तों की व्याख्या कीजिए |** **(i)** हर ऋण समझौते में ब्याज दर निश्चित कर दी जाती है, जिसे कर्जदार महाजन को मूल रकम के साथ अदा करता है | **(ii)** इसके अलावा, उधारदाता कोई समर्थक ऋणाधार (गिरवी रखने के लिए) की मांग कर सकता है | **(iii)** समर्थक ऋणाधार ऐसी संपत्ति है, जिसका मालिक कर्जदार है (जैसे कि भूमि, इमारत, गाड़ी, पशु, बैंकों में पूँजी) और इसका इस्तेमाल वह उधारदाता को गारंटी देने के रूप में करता है, जब तक कि ऋण का भुगतान नहीं हो जाता। **(iv)** यदि कर्जदार उधार वापस नहीं कर पाता, तो उधारदाता को भुगतान प्राप्ति के लिए संपत्ति या समर्थक ऋणाधार बेचने का अधिकार होता है।	**44-45**	**3x1 =3**

	(v) संपत्ति – जैसे कि ज़मीन, बैंकों में जमा पूँजी, पशु इत्यादि समर्थक ऋणाधार के आम उदाहरण हैं, जिनका उपयोग कर्ज लेने के लिए किया जाता है। **(vi)** ब्याज दर, समर्थक ऋणाधार, आवश्यक कागजात और भुगतान के तरीकों को सम्मिलित रूप से ऋण की शर्तें कहा जाता है | **(vii)** ऋण की शर्तों में एक ऋण व्यवस्था से दूसरी ऋण व्यवस्था में काफी फर्क आ जाता है | कर्ज की शर्तें उधारदाता और कर्जदार की प्रकृति पर भी निर्भर करता है | **(viii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु| **कोई तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**		
37.	**"अलग-अलग लोगों के विकास के लक्ष्य भिन्न हो सकते हैं | उदाहरणों सहित इस कथन कि व्याख्या कीजिए |** **(i)** प्रत्येक व्यक्ति की आकांक्षाएँ और इच्छाएँ अलग-अलग होती हैं क्योंकि विकास या प्रगति का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग होता है। **(ii)** उदाहरण के लिए- एक भूमिहीन ग्रामीण मजदूर काम करने के अधिक दिन और बेहतर मजदूरी; स्थानीय स्कूल में अपने बच्चों के लिए उत्तम शिक्षा; कोई सामाजिक भेदभाव नहीं हो और गांव में वे भी नेता बन सकें; की आकांक्षा रखता है | **(iii)** पंजाब के समृद्ध किसान अपनी उपज के लिए उच्च समर्थन मूल्य और मेहनती एवं सस्ते मजदूरों द्वारा उच्च पारिवारिक आय की आकांक्षा रखता है ताकि वे अपने बच्चों को विदेशों में बसा सकें | **(iv)** एक अमीर शहरी परिवार की लड़की को अपने भाई के समान स्वतंत्रता मिलती है और वह अपने फैसले खुद सकती है कि वह जीवन में क्या करना चाहती है। वह विदेश में अपनी पढ़ाई विदेश में कर सकती है। **(v)** दो व्यक्ति या व्यक्ति गुट ऐसी चीजें चाह सकते हैं, जिनमें परस्पर विरोध हो सकता है | एक लड़की भाई के समकक्ष स्वतंत्रता और अवसर मिलने और भाई भी घर के कामकाज में हाथ बंटायेगा, की आशा रखती है | हो सकता है कि भाई को यह पसंद न हो | **(vi)** इसी तरह, अधिक बिजली पाने के लिए उद्योगपति ज्यादा बाँध चाहते हैं | लेकिन इससे जमीन जलमग्न हो सकती है और उन लोगों का जीवन अस्तव्यस्त हो सकता है जो बेघर हो जायें, जैसे कि आदिवासी | वे इसका विरोध कर सकते हैं और हो सकता है कि वे अपने खेतों की सिंचाई के लिए केवल छोटे चेक बाँध या तालाब पसंद करें| **(vii)** कभी-कभी एक के लिए जो विकास है वह दूसरे के लिए विकास न हो | यहाँ तक कि वह दूसरे के लिए विनाशकारी भी हो सकता है| **(viii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**	**4-5**	**3x1 =3**

38.	**(a) 'काम के अधिकार' के प्रति भारत सरकार के द्वारा किए गए प्रयासों को स्पष्ट कीजिए |** **(i)** भारत में केंद्र सरकार ने भारत के लगभग 625 जिलों में 'काम के अधिकार' को लागू करने के लिए कानून बनाया। **(ii)** "काम के अधिकार" के तहत, महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम-2005 (MGNREGA-2005) और संशोधित करके विकसित भारत गांरटी फॉर रोजगार और आजीविका मिशन (ग्रामीण)-2025 (VB G RAM G-2025) लागू किया गया। इसके अंतर्गत ग्रामीण इलाकों में जो लोग काम कर सकते हैं और जिन्हें काम की ज़रूरत है, उन्हें सरकार साल में 100 दिन (अब 125 दिन) काम की गारंटी देती है । **(iii)** सरकार ने इन कानूनों के तहत अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जातियों के लिए कार्यों में आरक्षण का प्रावधान किया है। **(iv)** अगर सरकार रोजगार देने में असफल रहती है, तो वह लोगों को बेरोज़गारी भत्ता देती है । **(v)** 'काम के अधिकार' के तहत उन कामों को वरीयता दी जाएगी, जिसे भविष्य में भूमि से उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलेगी | उदाहरण के लिए, खेतों की सिंचाई के लिए बाँध और नहर बनाना, सड़कें और भण्डार गृह बनाना, इत्यादि । **(vi)** सरकार ने बैंकों और सहकारी समितियों के लिए कई प्रावधान किए हैं जो लोगों को ऋण देती हैं ताकि वे अपनी अलग-अलग ज़रूरतों के लिए सस्ते में ऋण ले सकें; वे फसलें उगा सकें और छोटे व्यवसाय शुरू कर सकें इत्यादि | **(vii)** नीति आयोग ने सरकार को सुझाव दिया है कि अलग-अलग क्षेत्रों में छोटे स्तर पर रोज़गार पैदा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, नीति आयोग का अनुमान है कि अकेले शिक्षा क्षेत्र में लगभग 20 लाख रोजगारों का सृजन किया जा सकता है। **(viii)** शहद संग्रह केन्द्रों, खेती-आधारित लघु उद्योग (जैसे दाल मिलें), और स्थानीय शिल्प उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग इत्यादि से भी रोज़गार पैदा होगा। **(ix)** सरकार काम करने के उचित कार्य परिस्थितियों को लागू करने के लिए कई कानून लागू करती है जो काम के अधिकार का एक अहम हिस्सा है। यह मज़दूरों को रोज़गार सुरक्षा प्रदान करती है; विशेषकर असंगठित क्षेत्रक में मज़दूरों की रक्षा । **(x)** स्वास्थ्य क्षेत्रक सुधार से ग्रामीण इलाकों में काम करने के लिए डॉक्टरों, नर्सों, स्वास्थ्य सहायकों आदि की ज़रूरत होगी जिससे रोजगार उत्पन्न होगा | **(xi)** ये सभी गतिविधियाँ और सेवाएं रोज़गार पैदा कर सकती हैं; आय , ग्रामीण समृधि और लोगों के कल्याण को बढ़ा सकती हैं । **(xii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु । **किन्हीं पांच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**	**27-29**	**5x1=5**

अथवा

(b) संगठित और असंगठित क्षेत्रकों के बीच अंतर को स्पष्ट कीजिए |

संगठित क्षेत्रक	**असंगठित क्षेत्रक**
(i) संगठित क्षेत्रक में वे उद्यम अथवा कार्य- स्थान आते हैं जहाँ रोज़गार की अवधि नियमित होती है और इसलिए लोगों के पास सुनिश्चित काम होता है।	(i) असंगठित क्षेत्रक छोटी-छोटी और बिखरी इकाइयों, जो अधिकांशतः सरकारी नियंत्रण से बाहर होती हैं, से निर्मित होता है | लोगों के पास सुनिश्चित काम होता है और उन्हें काम से कभी भी हटाया जा सकता है |
(ii) ये सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं |	(ii) ये भी सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं |
(iii) उन्हें सरकारी नियमों एवं विनियमों का अनुपालन करना होता है। इन नियमों एवं विनियमों का अनेक विधियों, जैसे, कारखाना अधिनियम, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, सेवानुदान अधिनियम, दुकान एवं प्रतिष्ठान अधिनियम, इत्यादि में उल्लेख किया गया है |	(iii) इस क्षेत्रक के नियम और विनियम होते हैं परन्तु उनका अनुपालन नहीं होता है |
(iv) इसमें कुछ औपचारिक प्रक्रियाएँ और कार्यविधियाँ होती हैं।	(iv) इसमें कुछ औपचारिक प्रक्रियाएँ और कार्यविधियाँ नहीं होती हैं।
(v) संगठित क्षेत्रक के कर्मचारियों को रोजगार सुरक्षा के लाभ मिलते हैं। उनसे एक निश्चित समय तक ही काम करने की आशा की जाती है।	(v) असंगठित क्षेत्रक के कर्मचारियों को रोजगार सुरक्षा के लाभ नहीं मिलते हैं। और उनके काम का समय भी निश्चित नहीं होता है।
(vi) वे नियोक्ता से कई दूसरे लाभ भी प्राप्त करते हैं। जैसे - सवेतन छुट्टी, अवकाश काल में भुगतान, भविष्य निधि, सेवानुदान इत्यादि पाते हैं।	(vi) इनके पास ऐसी कोई सुविधा नहीं होती है |
(vii) कारखाना मालिक को पेयजल और सुरक्षित कार्य-पर्यावरण जैसी सुविधाएँ सुनिश्चित करनी होती है |	(vii) उन्हें इस प्रकार की सुविधा नहीं भी दी जा सकती है |

30-31 **5x1=5**

	(viii) जब वे सेवानिवृत होते हैं, तो पेंशन भी प्राप्त करते हैं।	(viii) ऐसा कोई प्रावधान नहीं होता है |			
	(ix)कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु **|** **अंतर के किन्हीं पांच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**				
	नोट- प्रश्न संख्या 9 एवं प्रश्न संख्या 19 के लिए कृपया मानचित्र देखिए |				

प्रश्न सं. 9 और 19 के लिए मानचित्र
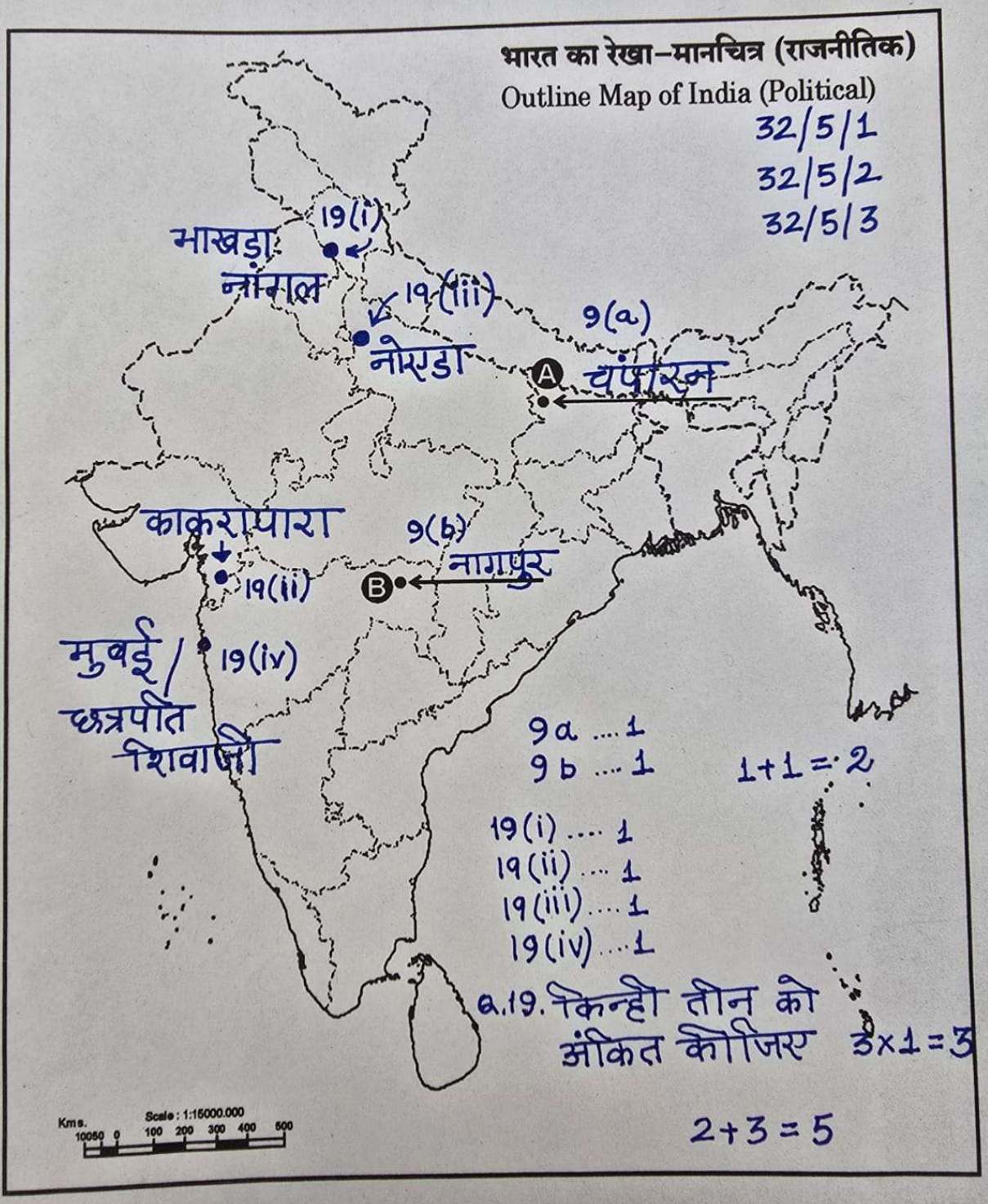
Map for Q. No. 9 and 19